चार सुसमाचार यीशु के विषय साक्षी देते हैं

चारों सुसमाचार किस प्रकार एक समान हैं और किस प्रकार वे भिन्न हैं, इसे समझना चाहिए।

स्वयं को प्रार्थना व वचन के अध्ययन द्वारा तैयार कीजिए।

प्रार्थना :"हे पवित्र पिता, आपने अपने पुत्र यीशु मसीह की साक्षी चारों सुसमाचारों में दी है, हमें अनुग्रह दीजिए कि सुसमाचार की बातें समझ सकें, उनका पालन कर सकें और दूसरों को उन्हें सिखा सकें।" आमीन।

1. पृष्ठभूमि :

- प्राचीनकाल से ही एक की अपेक्षा अनेक लोगों की साक्षी मान्य होती है। मूसा की व्यवस्था के अनुसार, दो तीन गवाहों के साथ मुकदमा सच्चा या कानूनी माना जाता है।
- पवित्रात्मा ने यीशु के जीवन व शिक्षाओं के हमें चार गवाह दिए हैं : मरकुस, मत्ती, लूका तथा यूहन्ना, इन्होंने ही चारों सुसमाचारों की रचना की है।
- चारों लेखक उस समय जीवित थे जबकि यीशु संसार में थे। तीन लेखक तो यीशु को अच्छी तरह जानते थे, और लूका ने यीशु से संबंधित तथ्यों की खोजबीन करके एकत्रित किया था (लूका 1:1-3)। इस प्रकार चारों सुसमाचारों के लेख, आंखों देखा लेखा-जोखा है जो एक दृढ़ साक्षी है।
- सभी लेखकों ने अपने सुसमाचारों में यीशु के विषय कुछ मिलते-जुलते वर्णन किए हैं, तथा सभी ने कुछ लेख जोड़ दिए हैं जो दूसरों ने छोड़ दिए थे। तो भी सब परस्पर सहमत हैं, कोई विरोधी बात नहीं है, इन सुसमाचारों में एक ही सत्य कहानी लिखी है।
- सदियों बाद, अन्य धर्मों ने यीशु के संबंध में लिखी बातों में परिवर्तन करने का प्रयास किया, लेकिन हम केवल चार मूल सुसमाचारों पर ही भरोसा रख सकते हैं।

Famous 17th century painting

लूका 1:1-4 पढ़ें, सुसमाचार कैसे लिखें गए?

चारों सुसमाचारों के लेखकों के नाम याद करें व उनकी मुख्य विशेषताओं ज्ञात करें।

मरकुस

- जब यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया, उस समय मरकुस जवान था।
- वह यहूदी परिवार का सदस्य था, उसने यीशु को देखा था, पतरस को जानता था।
- बाद में संत पौलुस के साथ उसने सेवकाई की। संभवत: उसने अन्य सुसमाचारों से पहले अपना सुसमाचार लिखा।
- यह सबसे छोटा सुसमाचार है, इसमें अधिकांशत: यीशु द्वारा किए गए कार्यों और गतिविधियों का वर्णन है। रोमी लोग सामर्थ का सम्मान करते थे, और मरकुस का सुसमाचार पढ़ने में रूचि रखते थे।

मत्ती

- मत्ती को जब तक यीशु ने अपना अनुमान करने की बुलाहट नहीं दी, तब तक वह कर वसूल करने वाला गम्भीर स्वभाव का एक यहूदी था।
- उसने अपने सुसमाचार में मरकुस के सुसमाचार के कुछ भाग सम्मिलित किया तथा व्यक्तिगत रीति पर जो कुछ अधिक बातें वह जानता था, लिखीं।
- उसने अनेक घटनाएं और यीशु से संबंधित अधिक बातें लिखीं जिन्हें यहूदी लोग सरलता से समझ सकते थे।

लूका

- लूका एक गैर-यहूदी वैद्य था जो यीशु की मृत्यु व पुनरुत्थान के बाद विश्वासी बना।
- उसने संत पौलुस के साथ मिशनरी यात्राएं कीं। जब पौलुस यहूदियों में बन्दी था, लूका उसके पास गया और यीशु के विषय सच्ची जानकारी प्राप्त की।
- लूका ने यीशु से संबंधित अनेकों बातें लिखीं, यहूदियों में जिन लोगों से उसने भेंट की व जानकारी ली, उनको क्रमानुसार, सावधानीपूर्वक लिखा।
- लूका ने अनेकों ऐतिहासिक एंव चिकित्सा संबंधी तथ्यों का वर्णन किया जो एक गैर-यहूदी पाठक को रुचिकर लगते हैं।

यूहन्ना

- यूहन्ना पहले यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का शिष्य या, परन्तु बाद में प्रभु यीशु का प्रिय शिष्य बना।
- यूहन्ना ने एक दीर्घ-कालिन आयु व्यतीत की। अपनी मृत्यु से पहले उसने अपने सुसमाचार में ऐसे वृतान्त लिखे जो अन्यों में नहीं हैं।
- उसने यीशु की ऐसी लम्बी वार्ताएं लिखी हैं जिन्हें हर पृष्ठभूमि का मसीही पढ़ना पसन्द करेगा।

कुल मिलाकर चारों सुसमाचारों में यीशु की शिक्षाओं, उसकी आज्ञाओं व उसकी प्रतिज्ञाओं के साथ-साथ उसके जीवन की मुख्य घटनाओं का वर्णन किया गया है।

- सभी सुसमाचाशें में बताया गया है कि कैसे उसे क्रूस पर मारा गया, दफन किया गया और कैसे वह जी उठा और विश्वासियों पर प्रकट हुआ।
- सुसमाचारों से प्रचार करना, आत्माएं जीतने का सबसे प्रभावशाली उपाय है।

2. अपने सहकर्मियों के साथ मिलकर आगामी सप्ताह की योजना बनाएं।

आपस में विचार-विमर्श करें कि सुसमाचारों के लेखक कौन थे, किन बातों में वे समान हैं और किन बातों में भिन्न हैं।

- विश्वासी व अविश्वासी लोगों से भेंट करें।
- बताएं कि चारों सुसमाचारों में सच्चे वर्णन पाए जाते हैं जो ऐसे लोगों ने लिखे जो यीशु को जानते थे।
- अविश्वासियों को एक सुसमाचार भेंट दें।
- विश्वासी जनों को सुसमाचार पढ़ने की योजना दें ताकि वे किसी एक सुसमाचार को पढ़ सकें।

3. अपने सहकर्मियों के साथ आगामी आराधना सभा की योजना बनाएं।

बच्चों को आराधना में नाटक या प्रश्न जो उन्होंने तैयार किए हैं, प्रस्तुत करने का अवसर दीजिए।

सबको बताएं कि चारों सुसमाचार ऐतिहासिक सत्य हैं, ये वृतान्त अन्य धार्मिक पुस्तकों के समान झूठी

कहानियां व मिथ्या नहीं।

चार विश्वासी व्यक्तियों को मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना बनाएं और भाग-1 में लिखित बातों के आधार पर अपना परिचय दें जैसा कि नीचे लिखा है :-

मरकुस : मैं मरकुस हूं। मैं पौलुस और बरनाबास के साथ प्रथम मिशनरी यात्रा पर गया था पर डर के कारण वापस लौट गया था। पौलुस मुझसे बहुत समय तक क्रोधित रहे पर बाद में उन्होंने मुझे क्षमा प्रदान की और मुझे सेवा का अवसर दिया।

मत्ती : मैं मत्ती प्रेरित हूं, मुझे लेवी नाम से भी जाना जाता है। मैं रोमी सरकार के लिए चुंगी जमा किया करता था, जिसके कारण यहूदी मुझसे घृणा करते थे। यीशु के पीछे चलने से पहले मेरे अनेकों मित्र भ्रष्ट आचरण के थे।

लूका : मैं डॉक्टर लूका हूं। अन्य यूनानी लोगों के समान मैं भी यीशु के जीवन पर कुछ लिखना चाहता था। मैंने अनेक यात्राओं में पौलुस का साथ दिया। मैंने पवित्रात्मा द्वारा अनेक लोगों के जीवनों को परिवर्तित होते देखा, जैसे ही लोग सुसमाचार सुनते थे वे बदल जाते थे। तब हम उन्हें एक साथ एकत्रित करके नई कलीसिया स्थापित कर देते थे।

यूहन्ना : मैं यूहन्ना हूं, पहला चेला, जो यीशु की खाली कब्र पर पहले पहूंचा था। मैं ही एक ऐसा चेला हूं जो शहीद नहीं हुआ, पर स्वाभाविक मृत्यु से मरा था। प्रभु की कृपा से मैं बहुत दिन तक जीवित रहा, हालांकि मैं जेल में था, यीशु के सन्देश मैंने लिखे।

विश्वासियों को यह बताने का अवसर दीजिए कि किस प्रकार सुसमाचारों के अध्ययन ने उन्हें आत्मिक लाभ पहुंचाया है।

प्रभु-भोज विधि मनाने के लिए पढ़ें मत्ती 27:27-31, समझाएं कि यीशु पर जो ताड़ना पड़ी वह हमारे पापों का दंड था। उसने दु:ख उठाया और हमारे बदले में मरा। जब भी हम प्रभु भोज विधि मनाते हैं इसी बात को स्मरण करते हैं।

सब याद करें : यूहन्ना 8:31-32

Paintings from the 7th century called the Lindisfarne Gospels :

मरकुस

मत्ती

लूका

यूहन्ना